पारितंत्र सेवाएं सुधार परियोजना

विश्व बैंक द्वारा वित्त पोषित पारितंत्र सेवाएं सुधार परियोजना (ई.एस.आई.पी.) सतत् भूमि और पारितंत्र प्रबंधन और जीविका लाभ के माध्यम से अनुकूलन आधारित शमन के लिए मॉडल का प्रदर्शन करके ग्रीन इंडिया मिशन के लक्ष्यों का समर्थन करता है। ई.एस.आई.पी. जैवविविधता और कार्बन स्टॉक सहित प्राकृतिक संसाधनों के बेहतर प्रबंधन के लिए नए उपकरण और प्रौद्योगिकी का प्रयोग कर रहा है। परियोजना के मुख्य घटक हैं: वानिकी और भूमि प्रबंधन कार्यक्रमों में सरकारी संस्थानों की क्षमता को मजबूत करना, वन गुणवत्ता में सुधार करना, और सतत् भूमि और पारितंत्र प्रबंधन की सर्वोत्तम प्रणालियों को बढ़ाना। ई.एस.आई.पी. को भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के समग्र मार्गदर्शन में भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद्, छत्तीसगढ़ वन विभाग और मध्य प्रदेश वन विभाग द्वारा मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ राज्यों के चुनिन्दा भूभागों में क्रियान्वयित किया जा रहा है।

प्रकाशित :

ई.एस.आई.पी.– परियोजना कार्यान्वयन इकाई
जैव विविधता और जलवायु परिवर्तन प्रभाग
भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद्
पो.ओ. न्यू फॉरेस्ट, देहरादून – 248 006
वेबसाइट : www.icfre.gov.in

कॉपीराइट@ICFRE, 2020

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

परियोजना निदेशक, पारितंत्र सेवाएं सुधार परियोजना
भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्
पो.ओ. न्यू फॉरेस्ट, देहरादून – 248006
फोन : 0135–2224831
ई–मेल : projectdirectoresip@gmail.com

परियोजना प्रबंधक, पारितंत्र सेवाएं सुधार परियोजना
भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्
पो.ओ. न्यू फॉरेस्ट, देहरादून – 248006
फोन : 0135–2224803, 2750296, 2224823
ई–मेल : rawatrs@icfre.org; esippm@gmail.com

नाडेप खाद
व्यर्थ को देती अर्थ

सतत् भूमि एवं पारितंत्र प्रबंधन की सर्वोत्तम प्रणाली

THE WORLD BANK
IBRD • IDA | WORLD BANK GROUP

नाडेप खाद बनाने की विधि

- नाडेप खाद हेतु टांका तैयार हो जाने के बाद उसे गोबर व पानी के घोल से अच्छी तरह से गीला कर देते हैं। पहली परत के रूप में खेती का कचरा जैसे फसलों के डंठल, टहनियां, पत्तियां आदि 6 इंच तक भर दी जाती हैं। 30 घन फीट के क्षेत्र में लगभग 100 से 125 किलो तक खेती का कचरा आता है। दूसरी परत के रूप में 100 से 150 लीटर पानी में 4 किलो गोबर मिलाकर पहली परत के ऊपर अच्छी तरह से छिड़काव कर देते हैं।
- तीसरी परत के रूप में 50 से 60 किलोग्राम मिटटी सामान रूप से दूसरी परत के ऊपर बिछा दी जाती है जिससे नमी बनी रहे और जैविक कचरे के अपघटन में सहायता हो।
- इसी प्रकार 10 से 12 परतों में टैंक को ऊंचाई से डेढ़ फुट ऊपर तक भर कर लगभग 3 इंच मोटी मिटटी की परत लगाकर गोबर से लेप देते हैं।
- 15 से 20 दिन के बाद टाँके की ऊंचाई 8–10 इंच कम हो जाती है जिसे पुनः परत दर परत भर कर डेढ़ फीट ऊंचाई के बाद पहले जैसा ही लेप देते हैं।
- इस प्रकार 3 से 4 महीने में दुर्गन्धरहित, भुरभुरी व अच्छी गुणवत्ता की नाडेप खाद बनकर तैयार हो जाती है।

नाडेप खाद
व्यर्थ को देती अर्थ

नाडेप खाद क्या है?

नाडेप खाद गोबर द्वारा बनायीं जाने वाली काफी लोकप्रिय खाद है जिसको महाराष्ट्र के एक किसान नारायण राव पाण्डेरी पांडे उर्फ नाडेप काका द्वारा विकसित किया गया है। इन्हीं के नाम पर इसका नाम नाडेप पड़ा। नाडेप विधि द्वारा कम गोबर के इस्तेमाल से अधिक मात्रा में अच्छी गुणवत्ता की खाद तैयार की जाती है।

नाडेप खाद बनाने के लिए बैड/टांका कैसे तैयार करें?

नाडेप खाद बनाने के लिए सबसे पहले बैड या टांका तैयार किया जाता है जोकि निम्न प्रकार से है। निम्न टाँके नाडेप खाद तैयार करने के लिए बनाये जा सकते हैं।

पक्का नाडेप

पक्का नाडेप ईंट तथा सीमेंट से तैयार किया जाता है जिसकी लम्बाई 10 से 12 फीट, चौड़ाई 5 से 6 फीट व ऊंचाई लगभग 3 फीट तक हो सकती है। इस विधि में ईंट जोड़ते समय बीच बीच में एक एक ईंट हटाकर 6–7 इंच के छेद छोड़ दिए जाते हैं जिससे हवा की आवाजाही बनी रहे।

भू– नाडेप/कच्चा नाडेप

बिना कोई गड्ढा खोदे जमीन पर पक्का नाडेप जैसी नाप का एक आकार देकर उसमें पक्का नाडेप जैसी भराई की जाती है। 5–6 फीट सामग्री जम जाने के बाद इसे चारों ओर से गीली मिटटी व गोबर से लेपकर बंद कर दिया जाता है और इसके सूखने के बाद इसमें चारों तरफ से टीन से गोल या चौकोर छेद कर दिए जाते है जिससे हवा की आवाजाही बनी रहे।

टट्टिया (बांस की पत्तियों, लकड़ी, डंठलों आदि से तैयार) नाडेप

भू नाडेप की तरह ही होता है इसमें सामग्री के ढेर को गोबर व मिट्टी से लेपने की बजाय बांस, लकड़ी या डंठलों से चारों और से बंद कर दिया जाता है। इसमें हवा की आवाजाही की कोई समस्या नहीं होती है।

नाडेप खाद बनाते समय ध्यान देने योग्य महत्त्वपूर्ण बातें

- नाडेप खाद के ढेर में नमी को बनाये रखें व दरारें न आने दें। ढेर पर गोबर व पानी के घोल का छिड़काव करते रहें और दरारों को घोल से भर दें।
- नाडेप खाद के टांके को एक दो दिन में ही भर लें।
- नाडेप का टांका हमेशा छायादार स्थान में ही बनायें और हो सके तो टाँके को घांस पत्तियों से ढककर रखें।

नाडेप खाद को उपयोग करने का तरीका

4 से 5 टन नाडेप खाद एक हेक्टेयर खेत के लिए पर्याप्त होती है जिसे बुआई या रुपाई से 15 दिन पहले खेत में फैलाकर तुरंत जुताई कर देनी चाहिए जिससे यह मिट्टी में अच्छी तरह से मिल जाये और धूप के प्रभाव से इसके पोषक तत्व कम न हों।

नाडेप खाद का महत्व

बहुत कम लागत में तैयार होने वाली इस जैविक खाद में पोषक तत्व भरपूर मात्रा में होते हैं, जो खेती के लिये संजीवनी हैं। यह खाद खेती में आने वाली लागत को कम करने के साथ–साथ, रसायनिक उर्वरकों से होने वाले दुष्प्रभाव से भी खेती व पारितंत्र की रक्षा करती है।